रमेश कुमार यादव
हिन्दी - विभाग
डी॰ के॰ कालेज
डुमरॉव, बक्सर

ध्वनि काव्य के भेद -

आनन्दवर्धन द्वारा प्रस्तुत ध्वनि के भेदों - प्रभेदों को आगे बढ़ाते हुए आचार्य मम्मट ने ५। प्रमुख भेद माने हैं जो परंपरा संयोजन द्वारा कई हजार तक जा पहुंचते हैं। किन्तु इनमें से ५ भेद ही प्रमुख हैं-

(क)- लक्षणामूला ध्वनि के दो भेद - अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि और अत्यंत तिरस्कृतवाच्य ध्वनि।

(ख)- अभिधामूला ध्वनि के तीन भेद- वस्तुध्वनि, अलंकार ध्वनि और रसध्वनि।

कुछ आचार्यों के अनुसार इनमें से प्रथम दो भी वस्तुतः वस्तुध्वनि के रूपांतर मात्र हैं, अतः इनके अनुसार ध्वनि के वस्तुध्वनि, अलंकार ध्वनि तथा रसध्वनि- तीन ही प्रमुख भेद स्वीकार किए जाने चाहिए।

अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि :-

जिस ध्वनि में वाच्यार्थ अपना पूर्ण तिरोभाव न करके अपना अर्थ रखते हुए भी अन्य अर्थ में संक्रमण करता है, वह अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि है जैसे 'यह घर अच्छा है'। यहां पर घर का तात्पर्य केवल घर ही नहीं, कुल समृद्धि संपत्ति आदि सबसे है जो लक्षणा से निकलता है, व्यंग्यार्थ हुआ कि संबंध करने लायक है। इसी तरह-

"सीता हरन तात जनि कहेउ पिता सन जाइ।
जौ मैं राम तौ कुलसहित कहिहि दसानन आइ॥"

यहां पर 'राम' शब्द का अर्थ शंकर का धनुष तोड़ने वाले, राक्षसों का नाश करने वाले, अद्भुत पराक्रमी है, का व्यंग्यार्थ हुआ कि रावण का नाश भी शीघ्र होगा।

(2) अत्यंततिरस्कृत वाच्यध्वनि –

जिस ध्वनि में वाच्यार्थ का सर्वथा तिरस्कार या त्याग हो जाता है, वह अत्यंत तिरस्कृत वाच्यध्वनि है। यह लक्षण लक्षणा पर आधारित है जैसे –

नीलोत्पल के बीच समाये मोती से आँसू के बूंद।'

यहां 'नीलोत्पल' का वाच्यार्थ अत्यंत तिरस्कृत हो गया है।

(3) वस्तुध्वनि –

जहां व्यंग्यार्थ किसी वस्तु (भाव) के रूप में प्रतीत होता है वहां वस्तु ध्वनि मानी जाती है। जैसे

"वह इष्ट देव के मंदिर की पूजा सी,
वह दीप शिखा सी शांत भाव में लीन।
वह क्रूर काल-तांडव की स्मृति रेखा सी
वह टूटे तरु की छुटी लता सी दीन,
दलित भारत की ही विधवा है।"

इस पद्य में भारत की विधवा को 'पूजा' 'दीप शिखा' 'क्रूर काल तांडव की स्मृतिरेखा' 'छुटीलता' आदि से उपमित किया गया है। इन उपमानों से भारत की विधवा की क्रमशः पवित्रता, तेजस्विता, दयनीय दशा तथा असहायावस्था द्योतित होती है। 'पवित्रता' आदि वस्तु है।

(4) अलंकार ध्वनि –

जहां व्यंग्यार्थ किसी अलंकार के रूप में प्रतीत होता है वहां अलंकार ध्वनि होती है।

"दियो अरघ नीचे चलौ संकट भानै जाइ।
सुचती है औरें सबै ससिहि बिलोकै आइ।"

अर्थात हे सखी दूज का चांद देख चुकी, उसे अर्घ्य भी दे चुकी, अब आओ नीचे चलें। कहीं ऐसा

न हो कि अन्य सभी सखियां दूज की रात्री में भी आकाश में पूनम का चांद उदित हुआ समझकर उसे देखने के लिए इकट्ठी हो जाएं।

उपर्युक्त उदाहरण में रूपक अलंकार व्यंग्य है, क्योंकि नायिका के मुख पर चंद्रमा का आरोप रूपक अलंकार के समान स्पष्ट रूप से वाच्य रूप में न किया जाकर अस्पष्ट रूप में - व्यंग्य रूप में - किया गया है।

(5) रस ध्वनि -

जहां व्यंग्यार्थ विभाव, अनुभाव और संचारीभाव के संयोग पर आधारित होता है वहां रसध्वनि मानी जाती है। काव्यशास्त्र में रस से तात्पर्य है रसादि आठ अर्थात् रस, भाव, रसाभास, भावाभास, भावोदय, भावसंधि, भावसबलता और भाव-शांति। अत: इसे रसादि ध्वनि भी कहते हैं। इसी का नाम असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि भी है - जहां वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ में क्रम होता हुआ भी लक्षित न हो। ध्वनि के अन्य भेदों की तुलना में इसमें वाच्यार्थ के उपरांत व्यंग्यार्थ की प्रतीति इतनी त्वरित होती है कि लक्षित नहीं होती।

"पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा
सिय न दीन्ह पग अवनि कठोरा।
जिवन मूरि जिमि जोगवत रहेऊं
दीप बाति नहिं टारन कहेऊं।
सो वन बसिहि तात केहि भांती।
चित्र लिखित कपि देखि डेराती।
सो सिय भवन रहै कह अंबा,
मो कहँ होय बहुत अवलंबा ॥"

यहां पर वाच्यार्थ के साथ ही व्यंग्यार्थ रूप रस का भाव प्रकट है। आलंबन सीता है। उद्दीपन उनकी सुकुमारता, स्निग्धता, भीरुता, अल्पवयस्कता आदि है। स्थायीभाव प्रिय के अनिष्ठ के कारण शोक है। संचारी चिन्ता, मोह, स्मरण, तर्क, दैन्य आदि हैं। अनुभाव आशंका, दैवनिंदा कथन आदि है। इस प्रकार करुण रस की अभिव्यक्ति यहां है। इसलिए रसध्वनि है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमरॉव
बक्सर (बिहार)